वर्ष २००६ के उपक्रम

पं० विद्यानिवास मिश्र के जन्म-दिवस १४ जनवरी (मकर संक्रान्ति) के अवसर पर उनके आवास 'परिस्पंद' में 'विद्याश्री न्यास' की तरफ से एक भव्य साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । प्रथम सत्र में पंडित जी के रचना-कर्म के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण आलेख प्रस्तुत किए गए । आलेख-पाठ के बाद इन आलेखों और पंडित जी के साहित्यिक अवदान एवं उनके विचार-सूत्रों को लेकर एक लंबी बातचीत चली । आलेख-पाठ करते हुए प्रो० बलराज पाण्डेय ने पंडितजी की लोक व शास्त्र-संबंधी अवधारणाओं को व्याख्यायित किया । अपने महत्वपूर्ण आलेख में उन्होंने स्पष्ट किया कि विद्यानिवास जी ने लोक और शास्त्र दोनों को एक दूसरे का संपूरक माना है । पण्डित जी के पास लोक जीवन की न सिर्फ गहरी परख है वरन् वे लोकमत को वेदमत और साधुमत की तरह ही प्रमाण मानते हैं । उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि शास्त्र के ठहराव को लोक ही तोड़ता है, उसे गति देता है, पण्डित जी इसे कई तरह से प्रमाणित करते हैं ।

प्रो० अवधेश प्रधान ने अपने गंभीर आलेख में रामायण और महाभारत के संबंध में पण्डित जी के चिंतन को समझने का प्रयास किया । उन्होंने यह स्पष्ट किया कि महाभारत का प्रतिपाद्य सत्य का करुणा के रूप में अवतरण है । उन्होंने पण्डित जी की मान्यताओं को प्रस्तुत करते हुए पाया कि पडित जी महाभारत की पीड़ा को वैयक्तिक पीड़ा न मानकर लोक की पीड़ा मानते हैं । पण्डित जी एक तरफ महाभारत के विस्तार से तो दूसरी तरफ रामायण की गहराई से प्रभावित होते हैं ।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने पण्डित जी की पुस्तक 'डिस्क्रिप्टिव टेकनिक ऑफ पाणिनि' पर अपने वक्तव्य को केन्द्रित किया । उन्होंने इस कृति में निहित मौलिकता को रेखांकित किया और दिखाया कि कैसे पंडित जी ने प्राचीन पण्डित परम्परा एवं पाश्चात्य भाषा-वैज्ञानिक पद्धति दोनों का समन्वय किया । इस क्रम में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में पंडित जी की दक्षता को भी पाण्डेय जी ने सोदाहरण प्रस्तुत किया ।

डॉ० नीरजा माधव ने अपने ललित निबंध 'परिस्पंद में पारिजात' में पंडित जी की अदम्य जिजीविषा, उनकी भ्रमणशीलता, लगनशीलता के साथ-साथ उनकी चिंताओं को आकार दिया । यह पंडित जी के प्रति एक आत्मीय, ललित श्रद्धांजलि थी । डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने पंडित जी के ललित निबंधों को केन्द्र में रखते हुए बताया कि पंडित जी के प्रतिष्ठा के केन्द्र में उनके ललित निबंध हैं । उन्होंने जोर देकर कहा कि केवल और केवल पंडित जी ही हैं जो हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी निबंध-कला के बल पर महत्वपूर्ण बने हुए हैं ।

देवव्रत चौबे ने पंडित जी की धर्म-दृष्टि का विवेचन किया। प्रो० चन्द्रकला त्रिपाठी ने बहुत कम समय लेते हुए कहा कि पंडित जी परम्परा से दुनियाँ की गढ़न का अर्थ लेते हैं। श्री प्रकाश शुक्ल, डॉ० गया सिंह, चन्द्रबली शास्त्री, डॉ० रामसुधार सिंह ने मुख्य रूप से आलेख-पाठों को आधार बनाते हुए अपनी बातें रखीं। विशिष्ट अतिथि कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने पंडित जी के साथ अपने पारिवारिक रिश्तों को रेखांकित करते हुए कुछ भावपूर्ण संस्मरण सुनाये। उन्होंने पंडित जी के रचनात्मक व्यक्तित्व को संपूर्णता में देखे जाने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने उनके रचनात्मक अन्तर्विरोधों की पहचान के प्रयत्नों को उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बताया।

गोष्ठी के अध्यक्ष प्रख्यात समीक्षक प्रो० बच्चन सिंह ने पंडित जी से जुड़े हुए रोचक संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वे साहित्य में, जीवन में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के प्रति सजग रहा करते थे। वे संवाद धर्मी रचनाकार थे। उनकी भावचित्रों की खेती के रेखांकन की जरूरत है। पंडित जी के भाई दयानिधि मिश्र ने भरे कंठ से उन्हें याद करते हुए उनके जन्म दिवस को और खुले रूप में मनाए जाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की। इस सत्र का संचालन क्रमशः डॉ० अरुणेश नीरन एवं डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पांडेय ने किया।

दूसरा सत्र काव्य-संध्या के रूप में आयोजित था। इस सत्र के आरंभ में भोजपुरी के प्रसिद्ध वयोवृद्ध कवि रामजियावन दास बावला को फूल-माला एवं अंगवस्त्र से श्री दयानिधि मिश्र ने सम्मानित किया। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे बावला जी की कविताओं से ही इस काव्य-संध्या का आरम्भ एवं समापन हुआ। रविकेश मिश्र, बलराज पाण्डेय, कपिलमुनि पंकज, चंद्रकला त्रिपाठी, अरुणेश नीरन, प्रकाश उदय, बलभद्र, हरिराम द्विवेदी, राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, अवधेश प्रधान, मंजुला चतुर्वेदी, चंद्रबली शास्त्री, श्रीप्रसाद आदि कवियों ने अपने-अपने काव्य पाठ से इस काव्य-संध्या को सफल बनाया। काव्य संध्या का संचालन प्रसिद्ध कवि श्रीकृष्ण तिवारी ने किया।

१४ जनवरी, २००६ को ही साहित्य अकादमी सभागार, नई दिल्ली में "चिकितुषी" नामक शोध पत्रिका के प्रवेशांक तथा पं० विद्यानिवास मिश्र के अप्रकाशित संग्रह "रहिमन पानी राखिये" का विमोचन श्री वी० कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की अध्यक्षता में डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा किया गया।

१४ जनवरी, २००६ को ही वाराणसी में प्रख्यात संस्कृत कवि डॉ० शिवजी उपाध्याय की अध्यक्षता में संस्कृत कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया।

अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशन की शृंखला में "भारतीय संस्कृति के आधार" एवं "श्री गीत गोविन्दम् हिन्दी संस्कृत व्याख्या द्वयोयेतम" का प्रकाशन कराया गया।

भोपाल में भारत भवन के सहयोग से विधाश्री न्यास द्वारा आयोजित पं० विद्यानिवास मिश्र पर मार्च २४, २५ तथा २६ को प्रख्यात चिन्तक तथा संस्कृतिविद डॉ० गोविन्द चन्द्र

पाण्डेय द्वारा व्याख्यान दिया गया । 'भारतीय अस्मिता की खोज' पर केन्द्रित इन तीन व्याख्यानों की अध्यक्षता प्रो० वागीश शुक्ल, श्री अच्युतानन्द मिश्र तथा प्रो० रमेश चन्द्र शाह द्वारा की गयी । इस अवसर पर संस्थापक न्यासी डॉ० महेश्वर मिश्र तथा वागार्थ के निदेशक रामेश्वर मिश्र पंकज भी उपस्थित थे ।

प्रो० पांडेय ने कहा कि हमारा समय एक सांस्कृतिक संकट का समय है । उन्होंने मूल्यों पर आधारित सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक संरचनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया । स्वराज्य की स्थापना के लिए मूल्यों का विशेष महत्व है । उन्होंने जीवंत संस्कृति के मूल को प्राक् इतिहास में देखने की आवश्यकता पर बल दिया । प्रो० पांडेय के व्याख्यान प्रकाशनाधीन हैं ।

●